''संगीत सम्मेलन''

डॉ. श्रुति होड़ा

संगीत कला उस निर्मल तथा पुनीत गंगाजल के समान है, जोकि अपने सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को निर्मलता एवं शीतलता प्रदान करते हुए प्रसन्नचित कर देता है। आदिकाल से ही संगीत को एक परम शांतिदायनी कला के रूप में सम्मानित किया जाता रहा है। इसी कला को कलाकार द्वारा सैंकडों कला प्रेमियों के समक्ष प्रत्यक्ष प्रस्तुतीकरण का सर्वोत्तम माध्यम संगीत सम्मेलन है।

सम्मेलन का अर्थ है, सम्मिलित होना। जिस समारोह में संगीतज्ञ तथा संगीत प्रेमी दोनो निरसंकोच रूप से सम्मिलित होते है। उसे 'संगीत सम्मेलन' की संज्ञा प्रदान की जाती है। स्वर्गीय श्री जगदीश नारायण पाठक के अनुसार, संगीत–प्रेमियों तथा संगीतज्ञों के सम्मेलन का नाम ही संगीत सम्मेलन है।